International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 30489458

कृष्णपरिणयं महाकाव्य में हिडिम्बा व भीम का प्रेम प्रसंग

डॉ॰ प्रो॰ दीपिका वर्मा
संस्कृत विभाग, इंस्टीट्यूट ऑफ ओरिएण्टल, फिलोसफी वृन्दावन, मथुरा, डॉ॰ भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा ।

गीता
शोधच्छात्रा, इंस्टीट्यूट ऑफ ओरिएण्टल, फिलोसफी वृन्दावन, मथुरा, डॉ॰ भीमराव अंबेडकर, आगरा ।

सारांश :

जयनारायणयात्री संस्कृत के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। उनकी काव्य कृतियों को भारतीय तथा विदेशी साहित्य शास्त्रियों ने प्रमुख रूप से काव्य सर्जन करने में उनकी विशेष रूप से प्रशंसा की है। संस्कृत साहित्य प्राचीनकाल से लेकर वर्तमान समय तक समाज में अपना विशेष योगदान देता रहा है। आधुनिक काल के संस्कृत के अनेक साहित्यकारों तथा समीक्षकों ने भी साहित्य के संवर्धन में उनका योगदान अविस्मरणीय माना है। किसी भी महाकवि से वर्तमान समय में अपेक्षा की जाती है कि उसे विविध विषयों का समुचित ज्ञान हो तथा वह भाव पक्ष के साथ–साथ कला पक्ष की भी जानकारी रखता हो । कवि जयनारायण यात्री भी इस अपेक्षा पर खरे उतरते है। जयनारायणयात्री ने भी मानव स्वभाव एवं मनोदशाओं को जितनी स्वाभाविकता से चित्रित किया है उतना संभवतः अन्य किसी संस्कृत कवि ने शायद ही किया हो । अतः इससे प्रकट होता है कि कालिदास को मानव–मनोविज्ञान का सूक्ष्म ज्ञान था।

भूमिका :

संस्कृत साहित्य विश्व का सबसे प्राचीन तथा महत्त्वपूर्ण माना जाता है। चाहे कोई भी युग रहा हो उसमें नये–नये कवि अर्थात् साहित्यकार उत्पन्न होते रहते है तथा काव्य की नई–नई विधाएँ प्रस्तुत करते रहते है। साहित्य लेखन में महिलाएँ भी अपना योगदान देने में पुरूष से पीछे नहीं है। आधुनिक समय में साहित्य में नये–नये नाटक, महाकाव्य, खण्डकाव्य, गीतिकाव्य, दोहे, कारिका, श्लोक इत्यादि गद्य पद्य मिश्रित चम्पूकाव्य लिखने में महिलाओं ने बढ़–चढ़कर भाग लिया है। समाज एक आईना होता है जिसमें अच्छी–बुरी जो भी घटना घटित होती है। उसी को कवि साहित्य में आधार बनाकर लिख देता है। उस घटना के पीछे कवि का कोई न कोई उद्देश्य अवश्य होता है तथा उसमें भविष्य में आने वाले पाठकों के लिए वह संदेश देना चाहता है और उस कार्य के पीछे विधि की योजना होती है यथा च कथितं

बिना प्रयोजनं मनुष्य किमऽपि कार्य न कुरुते
रामादिवद्वर्तितव्यं न रावणादिवदित्युपदेशं च ।[i]

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 30489458

प्राचीनकाल से लेकर वर्तमान काल में भारत के मनीषियों ने काव्य या साहित्य के प्रयोजन पर विचार किया है। यहां Art for Art's Sake आधुनिक उपयोगितावाद को ही काव्यभूमि में प्रतिष्ठित किया गया है। काव्य के दृष्ट तथा अदृष्ट दोनों प्रकार के प्रयोजन माने जाते हैं। काव्य का सर्वप्रथम प्रयोग भरतमुनि ने प्रयोग किया है। आचार्य भामह के अनुसार,

"धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च ।
करोति कीर्तिं प्रीतिं च साधुकाव्यनिबन्धनम्।।[ii]

प्रत्येक काव्य के आचार्यों तथा आधुनिक साहित्यकारों ने काव्य के प्रयोजन को भिन्न–भिन्न प्रकार से बताया है। मानवीय स्वभाव एवं मनोदशाओं के परिप्रेक्ष्य में कालिदास की काव्यकला का मूल्यांकन जिस प्रकार निःसन्देह अपेक्षित है। उसी प्रकार जयनारायण यात्री भी काव्य कला मे निपुण कवि कहे जाते है। संस्कृत महाकाव्यों में पति–पत्नी के पारस्परिक प्रेम का जो आदर्श रूप तथा एक दूसरे के प्रति सम्मान की भावना का जो वर्णन काव्यकृतियों में देखने को मिलता है। वहीं जयनारायण कवि ने अपनी रचना कृष्णापरिणयं में हिडिम्बा तथा भीम के प्रसंग में आदर्श पारस्परिक प्रेम का रूप दिखाकर तथा एक दूसरे के प्रति सम्मान की भावना का भी वर्णन किया है। 'कृष्णपरिणयं' महाकाव्य में अनेक स्थान पर ऐसे उल्लेख आए हैं, जहाँ पति ने भी अपनी पत्नी के प्रति अटूट प्रेम को प्रदर्शित किया है। कृष्णा अर्थात् द्रौपदी के चरित को आधार बनाकर इस महाकाव्य की रचना की गई है। जो कि नायिका प्रधान महाकाव्य कहलाता है। इसमें कुल 729 श्लोक है। इसमें कुल बारह सर्ग है तथा इसका मुख्य रस वीर है तथा अन्य रस इसके अंगी अर्थात् सहायक रस माने जाते है जो अधिकारिक की फलप्राप्ति तक रहते है। यह महाकाव्य महाभारत के 'आदि पर्व' से उद्घृत है जिसको आधार बनाकर कवि ने इसकी रचना की है तथा कवि ने इसमें अपनी प्रतिभा के अनुसार बीच–बीच में कुछ मौलिक परिवर्तन करके सहृदय पाठकों के लिए रूचिकर तथा ज्ञानवर्धक बनाने का पूरा प्रयास किया है। कवि ने इस महाकाव्य में केवल भाव पक्ष को समृद्ध न करके कला पक्ष को भी मजबुत तथा परिपूर्ण किया है। काव्य वह रचना है, जिससे चित किसी रस या मनोवेग से पूर्ण हो। प्राचीन आचार्यों के अनुसार महाकाव्य का नायक उदार तथा महान चरित्र वाला होता है। इसमें वीर, श्रृंगार तथा शांत रस में से कोई एक रस प्रधान होता है तथा शेष रस गौण होते है। यह प्रायः लम्बे कथानक पर आधारित तथा सर्गबद्ध होता है। इसमें कम से कम 8 सर्ग होते है। कृष्णापरिणयं के षष्ठ सर्ग में भीम तथा हिडिम्बा का वर्णन आता है। जिस वन में कुन्ती तथा उसके पुत्र दुर्योधन से छिपकर रह रहे थे; वहीं थोड़ी दूरी पर शाल का वृक्ष का आश्रय लेकर हिडिम्ब राक्षस अपनी बहन के साथ रहता था। वह नरभक्षी राक्षस था। वह बहुत डरावना तथा विशाल शरीर वाला था। हिडिम्ब राक्षस अपनी बहन से बोला हे बहन मुझे वन में मनुष्य की सुगन्ध आ रही है। तुम जल्दी से मनुष्य को ढूंढकर मुझको बता दो।[iii] ताकि हम आनन्द के साथ मांस खा सकें। भुख से व्याकुल वह राक्षस कहता है कि मुझे भूख सता रही है। बहुत दिनों बाद मनचाहा भोजन

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 30489458

प्राप्त हुआ है। जो मेरे हृदय को सदा पसन्द है। मेरी जीभ इसको खाने के लिए शीघ्रता कर रही है।[iv] वह हिडिम्बा मनुष्य की गन्ध को सूंघती हुई उसी वृक्ष को समीप जाती है। जहाँ वृक्ष के नीचे कुन्ती तथा उनके पुत्र सो रहे थे। वह वन में छिपकर देखती है कि चार पुरूष तथा एक नारी सो रहे है, वहाँ सावधान होकर एक पुरूष चारों ओर घूमता है। उसका शरीर तथा माथा विशाल है। उसकी लम्बी भुजाएँ तथा सुन्दर शरीर को देखकर वह सोचती है कि वह पुरूष तो पति बनाने योग्य है। मैं अपने भाई की बात न मानकर इसको नहीं मारूंगी।[अ] वह राक्षसी अपनी इच्छा के अनुसार अपना रूप बनाने में समर्थ थी। तब उसने अपना रूप बहुत जल्दी ही बदल लिया वह हिडिम्बा सुन्दर दिव्य नारी बन गई ।[अप] वह सोने के गहनों में सजी हुई तथा उसने अपने शरीर पर कीमती वस्त्र धारण किए हुए थी। उसके मुख रूपी चन्द्रमा की कान्ति से वन प्रकाशवान हो रहा था। वह हिडिम्बा गले में मोतियों की माला तथा सोने के कुण्डल धारण करती है। उसके मुख रूपी चन्द्रमा की कान्ति से वन प्रकाशवान हो रहा था। सुन्दर साड़ी पर सोने की तगड़ी पहनी हुई धीरे–धीरे हँसती हुई भीम के पास जाकर कहने लगी कि हे नरश्रेष्ठ आप कौन हैं। ये मनुष्य जो वृक्ष के नीचे सो रहे हैं। आपके क्या लगते हैं। क्या ये नहीं जानते कि यह वन राक्षसों के निवास योग्य है। हिडिम्ब नाम का राक्षस यहां रहता है। वह मेरा भाई है। उसने मुझे आपका मांस खाने की इच्छा से भेजा है, लेकिन कामदेव ने मुझे अपने वश में कर लिया है। मैं आपकी सेविका हूँ। मुझे स्वीकार करो। मनुष्य भक्षी राक्षस से मैं आपकी रक्षा करूँगी। तू मेरा पति बन जा। हिडिम्बा की बात सुनकर भीम कहता है कि अच्छे भाग्य वाली राक्षसी मेरी बात ध्यान से सुनो। मेरा बड़ा भाई जो मेरे लिए पिता तुल्य तथा सम्मानीय गुरू है। वह अभी तक अविवाहित हैं। उसने विवाह नहीं किया तो मैं उससे पहले विवाह कैसे कर सकता हूँ।[vii] तुम सुखपूर्वक अपने घर लौट जाओ। मैं अपने भाईयों तथा माता को वन में छोड़कर तेरे साथ नहीं जाता हूँ क्योंकि यह वन राक्षसों का है जो आपने मुझे बताया है। भीम के वचन सुनकर हिडिम्बा बोली जो आपको अच्छा लगता है वही करूँगी। इन सबको निद्रा से उठा दो मैं इनको नरभक्षसी राक्षस से बचाकर सुरक्षित स्थान पर ले जाऊँगी। हिडिम्बा की वाण सुनकर भीम बोला मेरी माता तथा भई सुखपूर्वक सो रहे है। मैं तेरे भाई के भय से इन्हें नहीं जाऊँगा।[अपपप] तुम अपनी इच्छा से जाओ या ठहरो अथवा अपने भाई को भेज दो। इस प्रकार से हम देखते है कि राजा पाण्डु तथा कुन्ती के माध्यम पुत्र भीम विशाल शरीर, शक्तिशाली, दृढ़प्रतिज्ञ, गदाधारी, कुशल योद्ध तथा भातृ प्रेम में प्रसिद्ध है। जिसके आधार पर उसके चरित्र–चित्रण को निम्नलिखित आधार पर प्रस्तुत कर सकते हैं। भीम के शरीर विशाल तथा शक्तिशाली था। इन्होंने अपनी शक्ति के बल पर ही हिडिम्ब तथा बकासूर नामक दोनों राक्षसों का वध यिका था। कृष्णपरिणयं महाकाव्य के षष्ठ सर्ग में हिडिम्ब तथा भीम का भयंकर युद्ध दिखाया गया है। भीम हिडिम्ब को कहता है कि इसने तेरा कोई अपराध नहीं किया। मेरे रहते हुए तू इसको नहीं मार सकता। मैं तेरे को यमराज के लोक में भेज देता हूँ। हे दुष्ट मेरे साथ अकेला युद्ध कर।[पग] मनुष्यों को खाने वाले राक्षस कुल के कलंक जब मैं युद्ध में तेरे को मार दूंगा तब लोग इस

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 30489458

वन में निर्विघ्न घूमेंगे। यह कहकर भीम चुप हो गया। राक्षस तथा भीम के युद्ध का वर्णन बड़े ही रोचक ढंग से करते हुए कवि कहता है कि–

तदा भीमसेनेन साराब्धिना स
बलेनार्दितो दानवः कोधितोऽभूत्।
समालिंग्य भीमं भुजाभ्या मगर्जत्
बिभेदास्य भीमो द्रुतं बाहुपाशम्।।[x]

अर्थात् तब बल के समुद्र भीम के द्वारा पंडित राक्षस क्रोधित हो गया तब भीम की भुजाओं को पकड़कर गर्जने लगा तब भीम ने इसका बाहुपाश अपनी शक्ति से तोड़ डाला। भीम ने उस राक्षस को भूमि पर पटककर विनष्ट कर दिया तथा वन को पवित्र कर दिया। कृष्णपरिणयं महाकाव्य में हिडिम्ब राक्षसी होते हुए भी मानवीय गुणों से युक्त एक दिव्य नारी के सभी गुणों से परिपूर्ण थी। वह 'अतिथि देवो भवः' के सिद्धान्त को ध्यान में रखकर उस वन में आए हुए पाण्डवों तथा उनकी माता की सुरक्षा अपने कुटुम्ब के व्यक्तियों की तरह करती थी। वह 'विश्व बंधुत्व' के सिद्धान्त से भी परिचित थी। हडिम्बा नामक राक्षसी पूर्व जन्म के प्रारब्ध संस्कार के कारण इस जन्म में हो सकता है। राक्षसी योनि में पैदा हुई हो। वैसे भी संस्कृत साहित्य में काव्य के हेतु तथा प्रयोजन जो बताए गए है उसी के अनुसार फल की प्राप्ति होती है। 'कर्मफल शतकम्' में कवि ने इसी बात को बताया है कि कुछ बुरा अदृष्ट कार्य जब हमारे सामने आ जाता है जिसके कारण व्यक्ति की उन्नति की जगह अवन्नति अर्थात् विनाश हो जाता है; लेकिन जैसे ही उसके सत्कर्म आ जाते है। बुरा कार्य हट जाता है तो वापिस उसकी उन्नति तथा प्रतिभा निखरकर आ जाती है।[गप] संस्कृत साहित्य में तो कर्मों के विषय में 'श्रीमद्भगवद्गीता' जो भारतीय धार्मिक पुस्तक है उसमें प्रसिद्ध श्लोक बताया गया है कि जैसे–

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
कर्मफलहेतुर्भूमा ते संगोऽस्त्वकर्माणि ।।"[xii]

अर्थात् तेरा कर्म करने में ही अधिकार है, उसके फलों में कभी नहीं। इसलिए तू कर्मों के फल हेतु तेरी कर्म न करने में भी आसक्ति न हो ।

You have a right to "Karma" (actions) but never to any fruits there of you should never be motivated by the results of your actions, nor should there be any attachment is not doing your prescribed activities.

भीम में कुशल योद्धा के सभी गुण विद्यमान थे।

भातृ–प्रेमी :

जब हिडिम्बा सुन्दर मानवी रूप धारण करके भीम के सामने आकर अपनी बात बताती है कि वह उसको पत्नी के रूप में स्वीकार करे तो भीम स्पष्ट शब्दों में उसको अपनी बात कह देता है। अतः इससे प्रतीत होता है कि भीम का अपने भाईयों के प्रति अटूट प्रेम था। जब वे वारणावत से निकलकर वन में गए थे तो वह अपने चारों भाईयों तथा माता की रखवाली अच्छे ढंग से करते है। जैसे–

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 30489458

वदत्यु लूकः करटा रत्रसन्ति, वदन्तिवारे विपिने श्रृगालाः।
परं न भीमो भय मेति वीरः स्वबान्धवानां प्रहरी प्रवीणः।।[xiii]

अर्थात् उल्लू जब बोलता है तो कौए डर जाते हैं। क्योंकि रात्रि में उल्लू को कौए मार देते हैं। वन मे गिद्ध समूह में बोलते रहते हैं किन्तु वीर भीम भयभीत नहीं होता। वह अपने भ्राताओं का कुशल पहरेदार है। हिडिम्बा राक्षसी होते हुए भी सेवा करने वाली महान् युवती थी; जो अपने से बड़ों की सेवा करने में निपुण थी। लेकिन आधुनिक नारियों में इस गुण का अभाव देखने को मिलता है। वर्तमान समय में नारी शिक्षित तो हो गयी; लेकिन अपने माता–पिता तथा सास–ससुर की सेवा करना भूल गई जो हमारी पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव कहा जा सकता है। प्राचीन काल में नारियाँ सभ्य वस्त्र, साड़ी तथा सुट–सलवार इत्यादि पूरे ढके हुए वस्त्र पहनती थी। जो भारतीय संस्कृति की एक अलग पहचान होती थी। आज भी विदेशों में भारतीय संस्कृति को अपनाया जाता है तो हम सब गर्व महसूस करते है; लेकिन हम जब पाश्चात्य सभ्यता जैसे महिलाओं का जींस, टीशर्ट, पजामा पहनना इत्यादि ये सब दिखाते है कि हमारे संस्कार हम भूलते जा रहे है और आधुनिक भौतिक सुख–सुविधाओं की ओर बढ़ते जाते है जिसके कारण हम नई–नई बिमारी, ैजतमे, टेंशन, बी॰पी॰ (स्वू), बी॰पी॰ (High), शूगर, प्लेट का घटना–बढ़ना, लिवर, पत्थरी इत्यादि का शिकार हो गए है क्योंकि हम ध्यान (Meditation) को छोड़कर हॉस्पिटल (Medical) की ओर जाना पसन्द करते है जबकि अध्यात्मिक ज्ञान को छोड़ रहे है। जिस प्रकार आत्मा हमारे शरीर के अन्दर है उसी प्रकार आत्मा की तुलना हम तोते (parrot) से कर सकते है। हम शरीर रूपी पिंजा की साफ–सफाई पर तो ध्यान देते है जो दिखावा अर्थात् च्मतेवदंसपजल ही है। हम शरीर की साफ–सफाई तो दिन में से कई बार करते है; लेकिन जो अन्दर पवित्र आत्मा है उसकी ओर ध्यान ही नहीं दे रहे हमारे शास्त्र प्रमाणिक है जिसको अपना लक्ष्य दिखाई दे गया वह जरूर पार उतरेगा। उसकी नाम राम भरोसे ही चलती है। बोध में भी अनुसन्धान जरूरी है। हिडिम्बा राक्षसी ने भी भीम को पाने के लिए अनेक प्रयास किए थे। उसके बड़े भाई युधिष्ठिर की शर्त मानी तथा उनकी माता की आज्ञा लेकर विवाह किया। क्योंकि जब इतने व्यक्ति विवाह के साक्षी होते है अग्नि के सामने 'वर–वधु' सात वचन की कसम खाते है तो विवाह किसी भी कारण से नहीं टूट सकता। लेकिन आधुनिक युग में कन्यापक्ष तथा वरपक्ष दोनों ने इसका समाज में एक गलत दृष्टिकोण दिखा दिया है। जिसके कारण आधुनिक युग में पढ़ी–लिखी शिक्षित स्त्री भ्झी विवाह करने से डरती है और अगर ज्यादा शिक्षित बहु मिल जाए तो वर पक्ष वाले डर जाते है कि यह सब कानून जानती है कभी हमारे लड़के को हमसे दूर न कर दे । जबकि ऐसा कुछ नहीं है। सकारात्मक पक्ष की बात सोचे तो अगर परिवार की नारी शिाति होंगी तो वह अपने बच्चों में अच्छे संस्कार देगी तथा उन्हें सर्वगुणसम्पन्न बनाने का प्रयास करेगी।[गपअ] दूसरे पहलू की बात करे तो कोई उनके परिवार का अर्थात् जमीन की फाइलों का गलत फायदा न उइा ले उसको भी देख लेगी कि यहां ये कार्य गड़बड़ है। वह कदम–कदम पर अपने परिवार का सुरक्षा कवच बनकर खड़ी रहेगी।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 30489458

इस तरह हम कह सकते है कि हिडिम्बा राक्षसी ने माता–कुन्ती की सभी बातें अपनी मां मानकर मानी है तथा जैसा उसने कहा वैसा ही किया है। यथा च कथितं –

जीर्णा नित्यं सत्यवाती हितस्य
भाषन्ते च व्यर्थं वाक्यं न तेषां
वृद्धेनोक्तं ग्राह्य मेवास्ति नित्यम्।[xv]

अर्थात् वृद्ध सदा हित की सत्य बात कहते हैं तथा उनका वाक्य व्यर्थ नहीं होता अर्थात् वे व्यर्थ वाक्य नहीं बोलते। वृद्ध के कहे हुए को नित्य ही ग्रहण करना चाहिए। अतः हिडिम्बा में आज्ञाकारी का गुण प्रमुख रूप से देखने को मिलता है। इस महाकाव्य के माध्यम से जो कुन्ती ने हिडिम्बा को शिक्षा दी है उसको मैंने भी अपनी जीवन में उतारने का प्रयास किया है। जैसे जब हिडिम्बा राक्षसी गर्भवती थी तो कुन्ती उसको शिक्षा देती हुई कहती है। यथा च कथितं –

ऊचे भूयोऽद्यावधि र्नोऽकरोस्त्वं
सेवां नित्यं मानसेनाधुनाहम् ।
कामं वृद्धा ते करिष्यामि सेवां
किञ्चित् कष्टं स्यात् तु शीघ्रं वदे र्माम्।।[xvi]

जब हिडिम्बा गर्भवती होती है तो कुन्ती माँ की तरह शिक्षा देती हुई कहती है कि –

ऊचा नीचा विद्यते वन्यभूमि
र्मुञ्चेदानी काानने चाटनंत्वम्
पाद स्तस्यां ते मनोज्ञे पतेन्न
विश्रामं त्वं पर्णमञ्चे कुरुष्व ।।[xvii]
रक्तस्य स्या न्नस्रव स्तेन कुक्षेः
कान्तेऽस्तीत्थं गर्भपातस्य भीतिः
ऊचै र्नीच्चैः स्थापयेः कौन पादम्
गन्तव्यं च ध्यानतो गर्भवत्या ।।[xviii]

अर्थात् वन की भूमि ऊँची–नीची होती है अब तू वन में घूमना छोड़ दे । सुन्दरी तेरा पैर उस भूमि पर न पड़े । तू अपनी पतों की चारपाई पर विश्राम कर उस भूमि पर पैर गिरने से पेट से खून का बहाव न हो खून न बे हे सुन्दरी इस प्रकार गर्भ के गिरने का भय रहता है। ऊँची–नीची भूमि पर पैर न रखना। गर्भवती को ध्यान से चलना चाहिए। इस प्रकार कुन्ती ने हिडिम्बा के माध्यम से सभी गर्भवती स्त्रियों को संदेश दिया है।

निष्कर्ष :

अतः निष्कर्ष में हम कह सकते है कि 'कृष्णपरिणयं महाकाव्य में हिडिम्बा तथा भीम का जो प्रेम–प्रसंग आया है वह बड़ा ही अद्भुत तथा अनुपम है। इस महाकाव्य के माध्यम से कहा जा सकता है कि मनुष्य का जीवन तथा मृत्यु भगवान् विष्णु के हाथ में है मनुष्य के वश में कुछ भी कार्य नहीं है। यथा चे कथितं–

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 30489458

शौरेः शये मनुज जीवन पज्चते च
किञ्चिद्वद्वशे करणमस्ति न देहिनोऽस्य।[xix]
विहित भात्मरक्षायै कार्य मन्याय एव न ।[xx]

संस्कृत साहित्य में तो सभी ग्रन्थों में कहा गया है कि आत्म रक्षा के लिए किया गया कार्य अन्याय नहीं होता है। पति प्रेम स्त्री के लिए सबसे ऊँचा होता है। हमारे शास्त्र भी इस बात को प्रमाणित सिद्ध करते है–

गतं न किञ्चिद् द्रवणिं गतं यदि गतं चरित्रं सममेव वै गतम्।[xxi]

अर्थात् यदि धन चला गया तो कुछ नहीं गया। यदि चरित्र चला गया तो सब कुछ ही चला गया ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

---

[i]- काव्यप्रकाश (मम्मट): सम्पा॰ डॉ॰ श्रीनिवासशास्त्री, साहित्य भण्डार, मेरठ, 1960 ।

[ii]- काव्यालंकार (भामह) : सम्पा॰ डॉ॰ रमण कुमार शर्मा, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली, 1960। प्रथम परिच्छेद, 2 कारिका) सम्पा॰ के॰ पी॰ केसवान, राष्ट्रीय शिक्षण संस्थान, नई दिल्ली, 1.21

[iii]- कृष्णपरिणयं (जयनारायणयात्री) प्रकाशक बालकृष्ण शर्मा एडवोकेट 3जी स्कूल कम कनाल एरिया, नीलाखेड़ी, करनाल (हरियाणा), प्रथम संस्करण, 2020 ।

[iv]- वही, 6.17

[v]- सुयोग्यः पतिर्मेयुवा विद्यतेऽयं
न मंस्ये स्वबन्धूक्तवाणीं कदापि
पतिप्रेम नार्यै समस्तोच्चमस्ति
समंतेनबन्धो नसौहार्द मेव । कृ॰ परि॰, 6.13

[vi]- विलोक्य स्मरार्ता विजाताऽसुरीसा
युवानं मनोज्ञतदा भीमसेनम् ।
यथेच्छं स्वरूपं विधातुं समर्था
तदाऽसीद हिडिम्बा चकाराचिरेण ।। वही, 6.15

[vii]- निशाम्या सुरि! त्वं मदीयाग्रजोऽस्ति
समानोमदर्थं सपित्रासुभाग्ये !
गुरु र्मानतीयोऽधुनायावदेष
विवाहं न चक्रे नशक्नोमिकर्तुम् ।। वही, 6.27

[viii]- हिडिम्बा गिरं भीमसेनो निशम्य
विहस्यावदन्मे प्रसूर्बान्धवाश्च ।
इमे शेरते बोधयिप्ये सुखेन
भयात् ते न बन्धोः कदापीन्दुभव्ये । वही, 6.32

[ix]- कृष्णपरिणयं, 6.30

[x]- तदा भीमसेनेन साराब्धिना सा
बलेनार्दितो दानवः क्रोधितोऽभूत् ।
समालिंग्य भीमं भुजाभ्यं मगर्जत्

बिभेदस्य भीमो द्रुतं बहुपाशम्।। वही, 6.56

[xi]- समाज के अनुभव के आधार पर

[xii]- श्रीमद्भगवद्गीता, तत्वविवेचनी टीका, गीताप्रेस गोरखपुर, गोबिन्दभवन, कार्यालय कोलकाता का संस्थान संवत् 2080, 56वां पुनमुद्रण, 2.47

[xiii]- कृ॰ परि॰, 5.44

[xiv]- स्वयं कवि के अनुभव के आधार पर

[xv]- कृ॰ परि॰, 8.8

[xvi]- वही, 8.2

[xvii]- वही, 8.3

[xviii]- वही, 8.4

[xix]- वही, 1.59

[xx]- वही, 2.58

[xxi]- वही, 9.21